

ABLAK GODE SUVAAR-Gujarati



અબ્લક ઘોડે સુવાર



- ❁ કુરબાની વાજિબ હોને કે વિધે કિતના માલ હોના ચાહિયે 06
- ❁ બકરી છુરી કી તરફ દેખ રહી થી 20
- ❁ એબદાર જાનવરોં કી તફસીલ જિન કી કુરબાની નહીં હોતી 10
- ❁ મખ્ખી પર રહમ કરના બાઈસે મગ્ફિરત હો ગયા 21
- ❁ કુરબાની કે વક્ત તમાશા દેખના કેસા ? 17
- ❁ કસ્સાબ કે લિયે 20 મ-દની ફૂલ 29
- ❁ ગોશત કે 22 અજઝા જો નહીં ખાતે જાતે 37



શીખે તરીકત, અબીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હાઝરત અલવાબા મૌલાના અબૂ ઈસાહ

મુહમ્મદ ઇબ્વાસ અત્તાર કાદિરી ૨-મવી

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ . اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ

કિતાબ પઢને કી દુઆ

અજ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી, હઝરત અલ્લામા
મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી વાલિહી عاليه
દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે ઝૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ
લીજિયે اللهم صل على محمد وآل محمد જો કુછ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હૈ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا دَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા : એ અલ્લાહ ઝલ્ જલ્ હમ પર ઈલ્મ વ હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઓર હમ પર અપની
રહમત નાઝિલ ફરમા ! એ અ-ઝમત ઓર બુઝુર્ગી વાલે ! (المستطرف ج ١ ص ٤٠٤ دار الفكر بيروت)
નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરુદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના

વ બકીઅ

વ મગ્ફિરત

13 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 1428 હિ.



“ અબ્લક ઘોડે સુવાર ”

યેહ રિસાલા (અબ્લક ઘોડે સુવાર)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત અલ્લામા
મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ عاليه
ને ઉર્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ
ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઓર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા
હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએ તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ
મક્તૂબ યા ઈ-મેઈલ) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના

સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને, તીન દરવાઝા,

અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત, ઈન્ડિયા

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुई पाक पढा अल्लाह उस पर दस रज्जतों भेजता है. (स्)

के बा'द मैं ने अेक प्वाब देभा के कियामत बरपा हो गई है और लोग अपनी अपनी कध्रों से निकल आये हैं, यकायक मेरा मईूम भाई अेक अब्लक (या'नी दो रंगे यितकुध्र) घोडे पर सुवार नजर आया, उस के साथ और भी बहुत सारे घोडे थे. मैं ने पूछा ? يَا أَخِي مَا فَعَلَ اللَّهُ تَعَالَى بِكَ ! अल्लाह तआला ने आप के साथ क्या मुआ-मला इरमाया ? कलने लगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे बप्श दिया. पूछा : किस अमल के सबाब ? कहा : अेक दिन किसी गरीब बुढिया को ब निय्यते सवाब मैं ने अेक दिरहम दिया था वोही काम आ गया. पूछा : येह घोडे कैसे हैं ? बोला : येह सबा मेरी ब-करह ईद की कुरबानियां हैं और जिस पर मैं सुवार हूं येह मेरी सबा से पहली कुरबानी है. मैं ने पूछा : अब कहां का अज़्म है ? कहा जन्नत का. येह कल कर मेरी नजर से ओजल हो गया. (رُزَّةُ النَّاصِحِينَ ص २१०) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रज्जत हो और उन के सहके उमारी बे हिसाब मग़िरत हो.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

“अल्लाह” के यार दुरुई की निरबत
से यार इराभीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

﴿1﴾ कुरबानी करने वाले को कुरबानी के जानवर के हर बाल

के बढले में अेक नेकी मिलती है (ترمذی ج ३ ص १२१ حدیث १६१४)

जिस ने जुश दिली से तालिबे सवाब हो कर कुरबानी की, तो वोह

करमाने मुस्तक! صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो शप्स मुज पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (परान)

आ-तशे जहन्नम से हिजाब (या'नी रोक) हो जायेगी (२१२१ हदीथ १६ व ३ ह ३) ﴿3﴾ औ इतिमा ! अपनी कुरबानी के पास मौजूद रहो क्यूंके इस के पून का पहला कतरा गिरेगा तुम्हारे सारे गुनाह मुआफ़ कर दिये जायेंगे (११११ हदीथ ६११ व १ ह १) ﴿4﴾ जिस शप्स में कुरबानी करने की वुरअत हो फिर भी वोह कुरबानी न करे तो वोह हमारी ईदगाह के करीब न आये. (३१२३ हदीथ ०१९ व २ ह ३)

क्या कर्ज ले कर भी कुरबानी करनी होगी ?

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! जो लोग कुरबानी की इस्तिताअत (या'नी ताकत) रखने के बा वुजूद अपनी वाजिब कुरबानी अदा नहीं करते, उन के लिये लम्हअे झिक्किया है, अव्वल येही ખસारा (या'नी नुकसान) क्या कम था के कुरबानी न करने से ईतने बडे सवाब से महरूम हो गये मजीद येह के वोह गुनाहगार और जहन्नम के हकदार भी हैं. इतावा अम्हदिय्या जिहद 3 सफ़हा 315 पर है : “अगर किसी पर कुरबानी वाजिब है और उस वक्त उस के पास रुपै नहीं हैं तो कर्ज ले कर या कोई चीज इरोप्त कर के कुरबानी करे.”

पुल मिरात की सुवारी

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि ईजने परवर दगार हो आलम के मालिको मुप्तार, शहन्शाहे अबरार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का इरमाने पुशबूदार है : ईन्सान ब-करह ईद के दिन कोई ऐसी नेकी नहीं करता जो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ को पून बहाने से जियादा प्यारी हो, येह

करमान मुस्तफ़ा صلى الله عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद पाक न पढा तदकीक वाह
बदभप्त हो गया. (उरु)

कुरबानी क्रियामत में अपने सींगों बालों और भुरों के साथ आयेगी और कुरबानी का भून जमीन पर गिरने से पहले अल्लाह के हां कबूल हो जाता है. लिहाजा भुश टिली से कुरबानी करो. (1498 حديث 122 ص 3) (ترويضه)
मुहकिंक अलल ईत्लाक, भातिमुल मुहदिसीन, हजरते अल्लामा शैभ अब्दुल हक मुहदिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي فرमाते हैं : कुरबानी, अपने करने वाले के नेकियों के पदले में रभी जायेगी जिस से नेकियों का पलडा भारी होगा. (اشعة اللّمعات ج 1 ص 104) हजरते सय्यिदुना अल्लामा अली कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي فرमाते हैं : फिर उस के लिये सुवारी बनेगी जिस के जरीअे येह शप्स ब आसानी पुल सिरात से गुजरेगा और उस (जानवर) का हर उज़्व मालिक (या'नी कुरबानी पेश करने वाले) के हर उज़्व (के लिये जहन्नम से आजादी) का इंदिया बनेगा.

(1470 الحديث 574 ص 3) (مِرْآة الْمُنَافِقِينَ ج 3 ص 574 تحت الحديث 1470) , मिरआत, जि. 2, स. 375)

कुरबानी करने वाले बाल नाभुन न काटे

मुइस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुइती अहमद यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْحَنَّان ओक हदीसे पाक (जब अ-शरह आ जाये और तुम में से कोई कुरबानी करना याहे तो अपने बाल व बाल को बिदकुल हाथ न लगाओ) के तह्त फरमाते हैं : “या'नी जो अभीर वुजूबन या इकीर नइलन कुरबानी का ईरादा करे वोह जुल डिजजतिल हुराम का यांइ देभने से कुरबानी करने तक नाभुन बाल और (अपने बदन की) मुदरि बाल वगैरा न काटे न कटवाओ ताके हाजियों से कदरे (या'नी थोड़ी) मुशा-बहत हो जाये के वोह लोग अहराम में हजामत नहीं करा सकते

करमाने मुस्तहब صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुझ पर दस भरतभा सुबह और दस भरतभा शाम दुइदें पाक पढा (उसे कियामत के दिन मेरी शक्रांजत मिलेगी. (15/18))

और ताके कुरबानी हर बाल, नापुन (के लिये जहन्नम से आजादी) का फ़िदया बन जाये. येह हुकम **ईस्तिड्बाबी** है वुजूबी नहीं (या'नी वाजिब नहीं, मुस्तहब है और हत्तल ईम्कान मुस्तहब पर भी अमल करना याछिये अलबत्ता किसी ने बाल या नापुन काट लिये तो गुनाह भी नहीं और औसा करने से कुरबानी में फलल भी नहीं आता, कुरबानी दुरुस्त हो जाती है) लिहाजा कुरबानी वाले का हजामत न कराना बेहतर है लाज़िम नहीं. ईस से मा'लूम हुवा के अर्थों की मुशा-बहत (या'नी नकल) भी अर्थी है.”

गरीबों की कुरबानी

मुफ़्ती साहिब رحمة الله تعالى عليه मज़ीद फ़रमाते हैं : “बल्के जो कुरबानी न कर सके वोह भी ईस अ-शरह (या'नी जुल डिज्जतिल हराम के इब्तिदाई दस अय्याम) में हजामत न कराये, ब-करह ईद के दिन बा'दे नमाजे ईद हजामत कराये तो إِنَّ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى (कुरबानी का) सवाब पायेगा.” (मिरआतुल मनाज्जिह, जि. 2, स. 370)

मुस्तहब काम के लिये गुनाह की इज्जत नहीं

याद रहे ! यालीस दिन के अन्दर अन्दर नापुन तराशना, बगलों और नाइ के नीचे के बाल साइ करना ज़रूरी है 40 दिन से ज़ियादा तापीर गुनाह है युनान्चे मेरे आका आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजदिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा भान رحمة الرحمن عليه फ़रमाते हैं : येह (या'नी जुल डिज्जत के इब्तिदाई दस दिन में नापुन वगैरा न काटने का) हुकम सिर्फ़ **ईस्तिड्बाबी** है, करे तो बेहतर है न करे तो मुज़ा-यका नहीं, न ईस

करमाने मुस्तक : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुरद शरीक न पढा उस ने जका की. (मरारत)

को हुकूम उद्दली (या'नी ना इरमानी) कल सकते हैं, न कुरबानी में नकस (या'नी षामी) आने की कोर्ष वजह, बल्के अगर किसी शप्स ने 31 दिन से किसी उज़र के सबब प्वाह बिदा उज़र नापुन न तराशे हों के यांद् जिल डिज्जा का हो गया तो वोह अगर्ये कुरबानी का इरादा रभता हो ईस मुस्तहब पर अमल नहीं कर सकता के अब दसवीं तक रभेगा तो नापुन तरश्वाअे हुअे ईक्तालीसवां दिन हो ज्आगेगा और यालीस दिन से जियादा न बनवाना गुनाह है. ई'ले मुस्तहब के लिये गुनाह नहीं कर सकता.

(मुलम्भस अज इतावा २-अविय्या, जि. 20, स. 353, 354)

दुरबानी वाजिब होने के लिये कितना माल होना चाहिये

इर बालिग, मुकीम, मुसल्मान मर्द व औरत, मालिके निसाब पर कुरबानी वाजिब है. (عالمگیری ج १ ص १९९) मालिके निसाब होने से मुराद येह है के उस शप्स के पास साढे भावन तोले यांद्दी या उतनी मालिय्यत की रकम या उतनी मालिय्यत का तिज्जरत का माल या उतनी मालिय्यत का हाजते अस्लिय्या के इलावा सामान हो और उस पर अल्दाह عَزَّوَجَلَّ या बन्दों का ईतना कर्जा न हो जिसे अदा कर के जिक्र कर्दा निसाब बाकी न रहे. हु-कहाअे किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام इरमाते हैं : हाजते अस्लिय्या (या'नी ज़ररिय्याते जिन्दगी) से मुराद वोह थीजें हैं : जिन की उमूमन ईन्सान को ज़ररत होती है और ईन के बिगैर गु-ज़रे अवकात में शद्दीद तंगी व दुश्वारी महसूस होती है जैसे रहने का घर, पहनने के कपडे, सुवारी, ईल्मे दीन से मु-तअद्लिक किताबें और पेशे से मु-तअद्लिक औज़ार

करमान मुस्तफा : صلى الله عليه وآله وسلم : जो मुज पर रोज जुमुआ दुरद शरीफ पढेगा मे कियामत क दिन उस के शकाअत करेगा. (अमल)

वगैरा. (الهداية ج 1 ص 96) अगर “हाजते अस्लिय्या” की ता’रीफ पेशे नजर रफी जाअे तो बभूबी मा’लूम होगे के “हमारे घरों में बे शुमार थीजें” ऐसी हैं के जो हाजते अस्लिय्या में दाखिल नहीं युनान्हे अगर एन की कीमत “साढे भावन तोला यांढी” के बराबर पछोंय गई तो कुरबानी वाजिब होगी.

अगर किसी शप्स के पास रिहाईशी मकान के एलावा मकान हो जो के किराअे पर हो या एस्ति’माली गाडियों के एलावा गाडियां हों जो किराअे पर हों और उन के किराअे पर ही उस शप्स की गुजर बसर हो, एन थीजों की आमदनी ही उस के अहलो एयाल के नईके (या’नी गुजारे) के लिये हो यूंही जिराअती (या’नी जेतीबाडी की) जमीन हो या भेंस या दीगर जानवर हों और उन से हासिल होने वाली आमदनी ही से उस का और अहलो एयाल का नईका (या’नी जर्थ) पूरा होता हो तो एन थीजों की मालियत/कीमत अगर्चे निसाब से जईद हो एस की वजह से उस शप्स पर कुरबानी व स-द-कअे इत्र लाजिम नहीं होगे, अलबत्ता अगर उस जमीन या मकान या गाडी या दुकान या जानवर वगैरा से आमदनी न हो या आमदनी हो लेकिन गुजर बसर व नईकअे अहलो एयाल के लिये दीगर आमदनी हो तो ऐसी सूरत में एन थीजों की मालियत निसाब की मिक्दार होने पर कुरबानी व स-द-कअे इत्र वाजिब होगे.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तछारत है. (पृ.१)

वक्त के अन्दर शराईत पाये गये तो ही कुरबानी वाजिब होगी

माल और दीगर शराईत कुरबानी के अय्याम (या'नी 10 जुल डिज्जतिल हराम की सुब्हे सादिक से ले कर 12 जुल डिज्जतिल हराम के गुइबे आइताब तक) में पाये जाअें जल्मी कुरबानी वाजिब होगी. ईस का मस्अला बयान करते हुअे सदरुशशरीअह, भदरुतरीकह उजरते अद्लामा मौलाना मुइती अमजद अली आ'उमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوَى "बछारे शरीअत" में इरमाते हैं : येह उइर नही के दसवीं ही को कुरबानी कर डाले, ईस के लिये गुन्नाईश है के पूरे वक्त में जब याहे करे लिछाऊा अगर ईब्तिदाअे वक्त में (10 जुल डिज्जत की सुब्ह) ईस का अइल न था वुजूब के शराईत नही पाये जाते थे और आभिर वक्त में (या'नी 12 जुल डिज्जत को गुइबे आइताब से पहले) अइल हो गया या'नी वुजूब के शराईत पाये गये तो उस पर वाजिब हो गई और अगर ईब्तिदाअे वक्त में वाजिब थी और अल्मी (कुरबानी) की नही और आभिर वक्त में शराईत जाते रहे तो (कुरबानी) वाजिब न रही.

(एालग़िरी ज 5 व 293)

**"कुरबानी वाजिब है" के भारह हुइइ की निस्मत
से कुरबानी के 12 म-दनी कूल**

❦ 1 ❧ बा'उ लोग पूरे घर की तरइ से सिई अेक बकरा कुरबान करते हैं

करमान मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : तुम जहा भी हो मुज पर दुरेद पढो क तुम्हारा दुरेद मुज तक
पहोचता है. (طبرانی)

हालांके बा'ज अवकात धर के कई अफ़राद साहिबे निसाब होते हैं और एस बिना पर उन सारों पर कुरबानी वाजिब होती है उन सब की तरफ़ से अलग अलग कुरबानी की जाये. एक बकरा जो सब की तरफ़ से किया गया किसी का भी वाजिब अदा न हुवा के बकरे में एक से ज़ियादा हिस्से नहीं हो सकते किसी एक ते शुदा इर्द ही की तरफ़ से बकरा कुरबान हो सकता है.

﴿2﴾ गाय (भेंस) और गिट में सात कुरबानियां हो सकती हैं.

(عالمگیری ج ۵ ص ۳۰۴)

﴿3﴾ ना बालिग की तरफ़ से अगर्थे वाजिब नहीं मगर कर देने बेहतर है (और एजाजत भी जरूरी नहीं). बालिग औलाद या जौज की तरफ़ से कुरबानी करना याहे तो उन से एजाजत तलब करे अगर उन से एजाजत लिये बिगैर कर दी तो उन की तरफ़ से वाजिब अदा नहीं होगी. (عالمگیری ج ۵ ص ۲۹۳, बहारे शरीअत, जि. 3, स. 428) एजाजत दो तरह से होती है : (1) सरा-हतन म-सलन उन में से कोई वाजेह तौर पर कइ दे के मेरी तरफ़ से कुरबानी कर दो (2) दला-हतन (UNDERSTOOD) म-सलन येह अपनी जौज या औलाद की तरफ़ से कुरबानी करता है और उन्हें एस का एल्म है और वोह राजी हैं. (इतावा अहले सुन्नत गैर मत्बूआ)

﴿4﴾ कुरबानी के वक्त में कुरबानी करना ही लाजिम है कोई दूसरी चीज एस के काँम मकाम नहीं हो सकती म-सलन बजाये कुरबानी

करमाने मुस्तक! صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरइद शरीफ न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शप्स है. (زينة)

के बकरा या उस की कीमत स-दका (भैरात) कर दी जाये येह नाकाफी है. (عالمگیری ج ۵ ص ۹۹۳, બહારે શરીઅત, જિ. ૩, સ. ૩૩૫)

﴿5﴾ **કુરબાની કે જાનવર કી ઉમ્મ :** “ઉંટ” પાંચ સાલ કા, ગાય દો સાલ કી, બકરા (ઇસ મેં બકરી, દુમ્બા, દુમ્બી ઔર ભેડ (નર વ માદા) દોનોં શામિલ હૈં) એક સાલ કા. ઈસ સે કમ ઉમ્મ હો તો કુરબાની જાઈઝ નહીં, ઝિયાદા હો તો જાઈઝ બલકે અફઝલ હૈ. હાં દુમ્બા યા ભેડ કા છ મહીને કા બચ્યા અગર ઈતના બડા હો કે દૂર સે દેખને મેં સાલ ભર કા મા’લૂમ હોતા હો તો ઉસ કી કુરબાની જાઈઝ હૈ. (دُرُؤخْتار ج ۱ ص ۳۳) યાદ રખિયે ! મુત્લકન છ માહ કે દુમ્બે કી કુરબાની જાઈઝ નહીં, ઈસ કા ઈતના ફર્ખા (યા’ની તગડા) ઔર કદ આવર હોના ઝરૂરી હૈ કે દૂર સે દેખને મેં સાલ ભર કા લગે. અગર 6 માહ બલકે સાલ મેં એક દિન ભી કમ ઉમ્મ કા દુમ્બે યા ભેડ કા બચ્યા દૂર સે દેખને મેં સાલ ભર કા નહીં લગતા તો ઉસ કી કુરબાની નહીં હોગી.

﴿6﴾ **કુરબાની કા જાનવર બે ઐબ હોના ઝરૂરી હૈ અગર થોડા સા ઐબ હો** (મ-સલન કાન મેં ચીરા યા સૂરાખ હો) તો કુરબાની મકરૂહ હોગી ઔર ઝિયાદા ઐબ હો તો કુરબાની નહીં હોગી.

(બહારે શરીઅત, જિ. ૩, સ. ૩૪૦)

ઐબદાર જાનવરોં કી તફ્સીલ જિન કી કુરબાની નહીં હોતી

﴿7﴾ એસા પાગલ જાનવર જો ચરતા ન હો, ઈતના કમઝોર કે હઙિયોં મેં મગ્ઝ ન રહા, (ઈસ કી અલામત યેહ હૈ કે વોહ દુબલે પન કી વજહ સે ખડા ન હો સકે) અન્યા યા એસા કાના જિસ કા કાના પન

करमाने मुस्तकاً صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरदे पाक न पड़े. (१७)

आखिर हो, ऐसा भीमार जिस की भीमारी आखिर हो, (या'नी जो भीमारी की वजह से यारा न जाये) ऐसा लंगडा जो फुद अपने पाँउं से कुरबान गाह तक न जा सके, जिस के पैदाईशी कान न हों या अेक कान न हो, वडूशी (या'नी जंगली) जानवर जैसे नीलगाय, जंगली बकरा या फुन्सा जानवर (या'नी जिस में नर व मादा दोनों की अलामतें हों) या जल्लावा जो सिर्फ़ गलीज़ भाता हो. या जिस का अेक पाँउं काट लिया गया हो, कान, द्रुम या यक्की अेक तिछाई (1/3) से जियादा कटे हुअे हों, नाक कटी हुई हो, दांत न हों (या'नी जउ गअे हों), थन कटे हुअे हों, या फुशक हों ईन सब की कुरबानी ना जाईज है. बकरी में अेक थन का फुशक होना और गाय, भेंस में दो का फुशक होना, “ना जाईज” होने के लिये काफ़ी है. (०३१.०३० व १ रज़ुमख्तारज, बहारे शरीअत, जि. 3, स. 340, 341)

﴿8﴾ जिस के पैदाईशी सींग न हों उस की कुरबानी जाईज है. और अगर सींग थे मगर टूट गअे, अगर जउ समेत टूटे हैं तो कुरबानी न होगी और सिर्फ़ ठीपर से टूटे हैं जउ सलामत है तो हो जाअेगी. (१११ व ०५ रज़ुमख्तारज)

﴿9﴾ कुरबानी करते वक्त जानवर उछला कूदा जिस की वजह से अैब पैदा हो गया येह अैब मुजिर नहीं या'नी कुरबानी हो जाअेगी और अगर उछलने कूदने से अैब पैदा हो गया और वोह छूट कर भाग गया और झौरन पकड कर लाया गया और जब्ज कर दिया गया जब भी कुरबानी हो जाअेगी.

(बहारे शरीअत, जि. 3, स. 342, ०३१ व १ रज़ुमख्तारज)

करमाने मुस्तका علی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : जिस ने मुऊ पर रोऊ जुमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआक होंगे. (कुरआन)

❖10❖ बेहतर यह है के अपनी कुरबानी अपने हाथ से करे जबके अच्छी तरह जल्द करना जानता हो और अगर अच्छी तरह न जानता हो तो दूसरे को जल्द करने का हुकूम दे मगर इस सूरत में बेहतर यह है के वक्ते कुरबानी वहां हाजिर हो.

(عالمگیری ج ۵ ص ۳۰۰)

❖11❖ कुरबानी की और उस के पेट में से जिन्दा बय्या निकला तो उसे भी जल्द कर दे और उसे (या'नी बय्ये का गोश्त) खाया जा सकता है और मरा हुआ बय्या हो तो उसे इंक दे के मुद्दर है. (बहारे शरीअत, जि. 3, स. 348) (कुरबानी हो गई और उस मरे हुआ बय्ये की मां का गोश्त खा सकते हैं)

❖12❖ दूसरे से जल्द करवाया और जुद अपना हाथ भी छुरी पर रख दिया के दोनों ने मिल कर जल्द किया तो दोनों पर बिस्मिल्लाह कहना वाजिब है. अक ने भी जान बूझ कर छोड दी या यह भयाल कर के छोड दी के दूसरे ने कल ली मुजे कलने की क्या जरूरत, दोनों सूरतों में जानवर हलाल न हुआ.

(दरमुख्तार १ व ००१)

जल्द में कितनी रंगें कटनी चाहियें ?

सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह हजरते अल्लामा मौलाना मुहंती अमजद अली आ'उमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं : जो रंगें जल्द में काटी जाती हैं वोह चार हैं. हुल्कूम यह वोह है जिस में सांस आती जाती है, मुरी इस से जाना पानी उतरता है इन दोनों

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुन पर दुइद शरीक पढे अल्लाह तूम पर रडमत भेजेगा. (अनसुर)

के अगल भगल और दो रगें हैं जिन में भून की रवानी है इन को व-दजैन कहते हैं. जभ की यार रगों में से तीन का कट जाना काफ़ी है या'नी इस सूरत में भी जानवर हलाल हो जायेगा के अक्सर के लिये वोही हुकम है जो कुल के लिये है और अगर यारों में से हर एक का अक्सर हिस्सा कट जायेगा जब भी हलाल हो जायेगा और अगर आधी आधी हर रग कट गई और आधी बाकी है तो हलाल नहीं.

(भडारे शरीअत, जिल्द : 3, स. 312, 313)

कुरबानी का तरीका

(याहे कुरबानी हो या वैसे ही जभ करना हो) सुन्नत येह यली आ रही है के जभ करने वाला और जानवर दोनों किब्ला रु हों, हमारे अलाके (या'नी पाक व हिन्द) में किब्ला मगरिब (WEST) में है, इस लिये सरे जभीहा (या'नी जानवर का सर) जुनूब (SOUTH) की तरफ़ होना चाहिये ता के जानवर बाओं (या'नी उलटे) पहलू लैटा हो, और उस की पीठ मशरिक (EAST) की तरफ़ हो ताके उस का मुंह किब्ले की तरफ़ हो जाये, और जभ करने वाला अपना दायां (या'नी सीधा) पाउं जानवर की गरदन के दाओं (या'नी सीधे) हिस्से (या'नी गरदन के करीब पहलू) पर रभे और जभ करे और भुद अपना या जानवर का मुंह किब्ले की तरफ़ करना तर्क किया तो मकरुह है.

(इतावा र-जविय्या, जि. 20, स. 216, 217)

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है. (हाशिम)

कुरबानी का ज़नवर ज़ब्र करने से पहले येह दूआ पढी जाये

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٤٩﴾ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٠﴾

और ज़नवर की गरदन के करीब पहलू पर अपना सीधा पाँउ रख कर 4

اللَّهُمَّ لَكَ وَمِنْكَ بِسْمِ اللَّهِ الْكَبِيرِ - 4

पढ कर तेज छुरी से जल्द ज़ब्र कर दीजिये. कुरबानी अपनी तरफ़ से हो तो

ज़ब्र के बाद येह दूआ पढिये :

اللَّهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّي كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِيلِكَ إِبْرَاهِيمَ :

عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ وَحَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ 5

अगर दूसरे की तरफ़ से कुरबानी करें तो मीनी के बजाये

उस का नाम लीजिये. (ब वक्ते ज़ब्र पेट पर घुटना या पाँउ न रखिये के

ईस तरह बा'उ अवकात खून के छलावा गिज़ा भी निकलने लगती है)

म-दनी इस्तिज़ा : कुरबानी में देख कर दूआ पढते वक्त रिसाले पर

नापाक खून न लगने पाये ईस का फयाल इरमाईये.

1 : तर-ज-मअे कन्जुल इमामन : मैं ने अपना मुँह उस की तरफ़ किया जिस ने आस्मान व जमीन बनाये अेक उसी का हो कर और मैं मुश्रिकों में नहीं. (17: الانعام 79)

2 : तर-ज-मअे कन्जुल इमामन : बेशक मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानियाँ और मेरा ख़ना और मेरा मरना सब अद्लाह के लिये है जो रब सारे ज़लान का (112: الانعام 87)

3 : उस का कोई शरीक नहीं मुझे येही हुकम है और मैं मुसल्मानों में हूँ. 4 : अे

अद्लाह (عَزَّوَجَلَّ) तेरे ही लिये और तेरी ही हुँत तौईक से, अद्लाह के नाम से शुर्अ

अद्लाह सब से बडा है. 5 : अे अद्लाह (عَزَّوَجَلَّ) तू मुज से (ईस कुरबानी को) कबूल

इरमा जैसे तूने अपने फलील इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام और अपने फलील मुहम्मद

इरमा से कबूल इरमाई. (बछारे शरीअत, जि. 3, स. 352)

करमाने मुस्तक! صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुज पर अक दुरेद शरीक पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अजर लिभता है और कीरात उबुद पहाड जितना है. (ज़िज़्ज़)

भकरी जन्ती जन्वर है

भकरी की धुंजत करो और इस से मिट्टी जाडो क्यूंके वोड जन्ती जन्वर है. (ऑफ़ोटोस बमाथोर الأخطاب ج 1 ص 69 حديث 201)

जन्वरों पर रहम की अपील

गाय वगैरा को गिराने से पहले ही किब्ले का तअय्युन कर लिया जाये, लिटाने के बा'द बिल खुसूस पथरीली जमीन पर घसीट कर किब्ला रुख करना बे जमान जन्वर के लिये सप्त अजिय्यत का बा'इस है. जब्द करने में धतना न काटें के छुरी गरदन के मोहरे (हडी) तक पछोंय जाये के येड बे वजह की तकलीफ़ है फिर जब तक जन्वर मुकम्मल तौर पर ठन्डा न हो जाये न उस के पाउं काटें न ખाल उतारें, जब्द कर लेने के बा'द जब तक रुह न निकल जाये छुरी कटे हुअे गले पर मस (TOUCH) करें न ही हाथ. बा'ज कस्साब जल्द "ठन्डी" करने के लिये जब्द के बा'द तडपती गाय की गरदन की जिन्दा खाल उधेड कर छुरी घोंप कर हिल की रगें काटते हैं, धसी तरह बकरे को जब्द करने के झौरन बा'द बेयारे की गरदन यटखा देते हैं, बे जमानों पर इस तरह के मजालिम न किये जायें. जिस से बन पडे उस के लिये जरूरी है के जन्वर को बिला वजह धजा पछोंयाने वाले को रोके. अगर बा वुजूदे कुदरत नहीं रोकेगा तो खुद भी गुनहगार और जहन्नम का हकदार होगा. दा'वते धस्लामी के धशाअती धदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ 1197 सईहात पर मुश्तमिल

करमाने मुस्तका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुइडे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अ/अ)

किताब, “बहारे शरीअत” जिल्द 3 सफ़हा 660 पर है :
 “जानवर पर जुल्म करना जिम्मी काफ़िर पर (अब दुन्या में सब काफ़िर हर्बी हैं) जुल्म करने से ज़ियादा बुरा है और जिम्मी पर जुल्म करना मुस्लिम पर जुल्म करने से भी बुरा है क्यूंके जानवर का कोई मुईन व मददगार अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा नहीं ईस गरीब को ईस जुल्म से कौन बचाये !”

(دَرْمُخْتَارُ رَدِّ الْمُخْتَارِ ج ٩ ص ٦٦٢)

मरने के बा'द मजलूम जानवर मुसल्लत हो सकता है

जुल्म करने के बा'द इह निकलने से कबल घुरियां यला कर बे ज़बान जानवरों को बिला वजह तकलीफ़ देने वालों को उर ज़ाना याहिये कहीं मरने के बा'द अज़ाब के लिये येही जानवर मुसल्लत न कर दिया जाये. दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1012 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल” जिल्द 2 सफ़हा 323 ता 324 पर है :
 ईन्सान ने नाहक किसी यौपाये को मारा या उसे त्बूका प्यासा रखा या उस से ताकत से ज़ियादा काम लिया तो क्रियामत के दिन उस से उसी की मिस्ल बदला लिया जायेगा जो उस ने जानवर पर जुल्म किया या उसे त्बूका रखा. ईस पर दर्जे जैल उदीसे पाक दलावत करती है. युनान्चे रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जहन्नम में अेक औरत को ईस डाल में देखा के वोड लटकी हुई है और अेक बिल्ली उस के येडरे और सीने को नोय रही है और उसे

करमाने मुस्तफ़اً صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुझ पर अक बार दुइडे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रकमतें बेजता है. (स्म)

वैसे ही अजाब दे रही है जैसे उस (औरत) ने दुन्या में कैद कर के और लूका रफ कर उसे तकलीफ़ दी थी. इस रिवायत का छुक्रम तमाम जानवरों के हक में आम है. (الروايج ٢ ص ١٧٤)

कर ले तौबा रफ़ की रहमत है बडी

कध में वरना सजा होगी कडी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللهِ ! اسْتَغْفِرُ اللهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कुरबानी के वक्त तमाशा देपना कैसा ?

कुरबानी का जानवर अपने हाथ से ज़ब्त करना अइज़ल और भ वक्ते ज़ब्त भ निय्यते सवाबे आभिरत वहां छाज़िर रहना भी अइज़ल. मगर ईस्लामी बहन सिर्फ़ उसी सूरत में वहां भडी हो सकती है जब के बे पर्दगी की कोई सूरत न हो म-सलन अपने घर की यार दीवारी हो, जाबेह (या'नी ज़ब्त करने वाला) महरम हो और छाज़िरीन में भी कोई ना महरम न हो. हां गैर महरम ना बाविग लउका मौजूद हो तो हरज नहीं. मइज़ हज़ूजे नईस (या'नी मजा लेने) की जातिर ज़ब्त होने वाले जानवर के गिर्द घेरा डालना, उस के यिल्लाने और तउपने इउकने से लुत्फ़ अन्होज़ होना, हंसना, कइकडे बुलन्ट करना और उस का तमाशा बनाना सरासर गइलत की अलामत है. ज़ब्त करते वक्त या अपनी कुरबानी हो रही हो उस

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोड जन्नत का रास्ता भूल गया. (प्रान)

के पास हाजिर रहते वक्त अदाअे सुन्नत की नियत होनी याहिये और साथ ही येह भी नियत करे के में जिस तरह आज राहे फुदा में जानवर कुरबान कर रहा हूं, व वक्ते ज़रूरत **إِنِ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** अपनी जान भी कुरबान कर दूंगा. नीज येह भी नियत हो के जानवर ज़ह कर के अपने नईसे अम्भारा को भी ज़ह कर रहा हूं और आयन्दा गुनाहों से बयूंगा. ज़ह होने वाले जानवर पर रहम पाअे और गौर करे के अगर ईस की जगह मुजे ज़ह किया जा रहा होता और लोग तमाशा बनाते और बख्ये तालियां बजाते होते तो मेरी क्या कैफ़ियत होती !

जभीहा को आराम पढोयाईये

हजरते सय्यिदुना शदाद बिन औस **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है के सय्यिदुल मुर-सलीन, भा-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रहूमतुल्लिल आ-लमीन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरमाया : अद्लाह तआला ने हर यीज के साथ नेकी करने का हुकम दिया है, लिहाजा जब तुम किसी को कत्ल करो तो अहूसन (या'नी बहुत अच्छे) तरीके से कत्ल करो और जब तुम ज़ह करो तो अहूसन (या'नी पूब उम्दा) तरीके से ज़ह करो और तुम अपनी छुरी को अच्छी तरह तेज कर लिया करो और अभीहा को आराम दिया करो. (صَحِيح مُسْلِم 1080 احديث 1900) व वक्ते ज़ह रिजाअे ईलाही की नियत से जानवर पर रहम पाना कारे सवाब है जैसा के अेक सहाबी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने बारगाहे रिसालत में अर्ज की : या रसूलद्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ! मुजे बकरी ज़ह करने पर रहम आता है. इरमाया : “अगर उस पर रहम करोगे अद्लाह **عَزَّوَجَلَّ** भी तुम पर

इरमाने मुस्तक़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुइडे पाक न पढा तहकीक वोह
बदबप्त हो गया. (उरुद)

रहूम इरमाओगा.”

(मुसुनइमाम अहमद बिन हनुबल ज ० व ० ३०६ हदथ १००११)

जानवर को भूका प्यासा जब्द न करें

सदरुशरीअह, बदरुतरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुइती अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं : कुरबानी से पहले उसे यारा पानी दे दें या'नी भूका प्यासा जब्द न करें और अेक के सामने दूसरे को न जब्द करें और पहले से छुरी तेज कर लें अैसा न हो के जानवर गिराने के बा'द उस के सामने छुरी तेज की जाओ. (बहारे शरीअत, जिल्द : 3, स. 352) यहां अेक अज्जोओ गरीब खिकायत मुला-हजा हो युनान्ये उजरते सय्यिदुना अबू जा'इर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ इरमाते हैं : अेक बार में ने जब्द के लिये बकरी लिटाई छतने में मशहूर बुजुर्ग उजरते सय्यिदुना अय्यूब सप्तियानी قُدَسِ سِرَّةِ النَّوْرَانِي छधर आ निकले, मैं ने छुरी जमीन पर डाल दी और गुइत-गू में मशगूल हुवा, दर्री अस्ना बकरी ने दीवार की जड में अपने पुरों से अेक गढा षोढा और पाउं से छुरी उस में धकेल दी और उस पर भिड्डी डाल दी ! उजरते सय्यिदुना अय्यूब सप्तियानी قُدَسِ سِرَّةِ النَّوْرَانِي इरमाने लगे : अरे देओ तो सही ! बकरी ने येह क्या किया ! येह देओ कर मैं ने पुज्ता अज्म कर लिया के अब कत्मी ली किसी जानवर को अपने हाथ से जब्द नहीं कइंगा.

(حياة الحيوان ج २ ص ११)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! ईस खिकायत से मुराद येह मुराद नहीं के जब्द करना कोई गलत काम है. अस ईस तरह के वाकिआत

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढा
(उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्रामत मिलेगी. (रुह))

बुजुर्गों के ग-ल-बअे डाल पर मब्नी डोते हैं. वरना मस्अला येडी
है के अपने डाय से जब्द करना सुन्नत है.

बकरी छुरी की तरफ़ टेष रही थी

सरकारे अबद करार, शाफ़ेअे रोज़े शुमार, बि ँजने
परवर दगार दो आलम के मालिको मुप्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
अेक आदमी के करीब से गुजरे, वोड बकरी की गरदन पर
पाँउं रष कर छुरी तेज कर रडा था और बकरी उस की तरफ़
टेष रही थी, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस से ँशार्द इरमाया :
“क्या तुम पडले अैसा नहीं कर सकते थे ? क्या तुम ँसे कँ
मौतें मारना चाडते डो ? ँसे लिटाने से पडले अपनी छुरी तेज
क्यूं न कर ली ?”

(أَلْمُسْتَدْرَكُ لِأَحْكَامِ ج ٥ ص ٣٢٧ حديث ٧٦٣٧، أَلْسُنُ الْكُبْرَى لِلْبَيْهَقِيِّ ج ٩ ص ٧١)
حديث ٩١٤١، مُلْتَقَطًا مِنَ الْحَدِيثَيْنِ

जब्द के लिये टांग मत धसीटो !

अमीरुल मुअमिनीन डजरते सय्यिदुना इरुके आ'जम
رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अेक शप्स को देषा जो बकरी को जब्द करने के
लिये उसे टांग से पकड कर धसीट रडा है, आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ
ने ँशार्द इरमाया : तेरे लिये ञराबी डो, ँसे मौत की तरफ़
अरखे अन्दाज में ले कर जा.

(مُصَنَّفُ عَبْدِ الرَّزَّاقِ ج ٤ ص ٣٧٦ حديث ٨٦٣٦)

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद शरीक़ न पढा उस ने जफ़ा की. (महाजिन)

मज्जी पर रहम करना जाईसे मज्फ़िरत हो गया

किसी ने ज्वाब में हुज्जतुल ईस्लाम हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي को देख कर पूछा : 'مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ؟' अद्लाह एज़्ज़ल ने आप के साथ क्या मुआ-मला इरमाया ? ज्वाब दिया : अद्लाह एज़्ज़ल ने मुझे बज्श दिया, पूछा : मज्फ़िरत का क्या सबब बना ? इरमाया : अक मज्जी सियाही (INK) पीने के लिये मेरे कलम पर बैठ गई, मैं लिखने से रुक गया यहां तक के वोह फ़ारिग हो कर उठ गई.

(لطائف الينن والآخلاق للشّعراى ص ۳۰۵)

मज्जी को मारना कैसा ?

याद रहे ! मज्जियां तंग करती हों तो उन को मारना जाईज है ताहम जब भी हुसूले नइअ या दइअे ज़रर (या'नी इअेदा हासिल करने या नुकसान जाईल करने) के लिये मज्जी या किसी भी बे ज़बान की जान लेनी पडे तो उस को आसान से आसान तरीके पर मारा जाअे ज्वाह म ज्वाह उस को बार बार जिन्दा कुयलते रहने या अक वार में मार सकते हों फिर भी ज़म्म जा कर पडे हुअे पर बिला ज़ररत ज़र्बे लगाते रहने या उस के बदन के टुकडे टुकडे कर के उस को तडपाने वगैरा से गुरेज किया जाअे. अकसर बअ्ये नादानी के सबब अ्यूटियों को कुयलते रहते हैं उन को इस से रोका जाअे. अ्यूटी बहुत कमजोर छोटी है युटकी में उठाने या हाथ या जाडू से हटाने से उभूमन ज़म्मी हो जाती है, मौकअ की मुना-सबत से उस पर इंक मार कर भी काम यलाया जा सकता है.

करमाने मुस्तक। طلى الله تعالى عليه واله وسلم : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीक पडेगा में कियामत के दिन उस की शक़ाअत करेगा. (क़ुरआन)

कुरबानी में अकीके का हिस्सा

कुरबानी की गाय या गींट में अकीके का हिस्सा हो सकता है।

(رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ٩ ص ٥٤٠)

धजतिमाध कुरबानी का गोश्त वजून कर के तक्सीम करना होगा

अगर शिकत में गाय की कुरबानी की तो ज़रूरी है के गोश्त वजून कर के तक्सीम किया जाये, अन्दाजे से तक्सीम करना ज़रूरी नहीं, करेंगे तो गुनहगार होंगे। बजुशी अके दूसरे को कम जियादा मुआफ़ कर देना काफ़ी नहीं। (मुलम्बस अज बहारे शरीअत, जि. 3, स. 335) हां अगर सब अके ही घर में रहते हैं के मिल कर ही भांटेंगे और भायेंगे या शु-रका अपना अपना हिस्सा लेना नहीं याहते, औसी सूरत में वजून करने की लाजत नहीं।

अन्दाजे से गोश्त तक्सीम करने के दो हीले

अगर शु-रका अपना अपना हिस्सा ले जाना याहते हों तो वजून करने की मशक़त से बचने के लिये दो हीले कर सकते हैं :

﴿1﴾ जब्द के बा'द इस गाय का सारा गोश्त अके औसे बालिग मुसल्मान को डिबा (या'नी तोइकतन मालिक) कर दें जो उन की कुरबानी में शरीक न हो और अब वोह अन्दाजे से सब में तक्सीम कर सकता है ﴿2﴾ दूसरा हीला इस से भी आसान है जैसा के कु-कहाअे किराम रَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَامُ इरमाते हैं : गोश्त तक्सीम करते वक्त उस में कोई दूसरी जिन्स (म-सलन कलेज मज्ज वगैरा) शामिल की जाये तो भी अन्दाजे से तक्सीम कर सकते हैं. (رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ٩ ص ٥٢٧) अगर कई चीजें डाली

करमाने मुस्तक। طلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अहमद)

हैं तो हर अक में से टुकड़ा टुकड़ा देना लाजिमी नहीं। गोश्त के साथ सिर्फ अक चीज देना भी काफी है। म-सलन तिल्ली, कलेज, सिरि पाये डाले हैं तो गोश्त के साथ किसी को तिल्ली दे दी, किसी को कलेज का टुकड़ा, किसी को पाया, किसी को सिरि। अगर सारी चीजों में से टुकड़ा टुकड़ा देना चाहें तब भी हरज नहीं।

कुरबानी के गोश्त के तीन हिस्से

कुरबानी का गोश्त षुद भी जा सकता है और दूसरे शप्स गनी (या'नी मालदार) या इकीर को दे सकता है भिला सकता है बल्के उस में से कुछ जा लेना कुरबानी करने वाले के लिये मुस्तलब है। बेहतर येह है के गोश्त के तीन हिस्से करे अक हिस्सा कु-करा के लिये और अक हिस्सा दोस्त व अहबाब के लिये और अक हिस्सा अपने घर वालों के लिये. (عالمگیری ج ۵ ص ۳۰۰) अगर सारा गोश्त षुद ही रभ लिया तब भी कोई गुनाह नहीं। मेरे आका आ'ला हजरत, ईमाम अहमद रजा जान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरमाते हैं : तीन हिस्से करना सिर्फ ईस्तिहबाभी अत्र है कुछ जरूरी नहीं, याहे तो सब अपने सर्फ (या'नी ईस्ति'माल) में कर ले या सब अजीजों करीबों को दे दे, या सब मसाकीन को बांट दे. (इतावा र-जविय्या, जि. 20, स. 253)

वसियत की कुरबानी के गोश्त का मस्यला

मन्नत या मर्हूम की वसियत पर की जाने वाली कुरबानी का सब गोश्त कु-करा और मसाकीन को स-दका करना वाजिब है न षुद जाये न मालदारों को दे. (मापूज अज बहारे शरीअत, जि. 3, स. 345)

કરમાને મુસ્તફા علیہ وآلہ وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुइद पढो के तुम्हारा दुइद मुज तक पछोंयता है. (طرائق)

છ સુવાલાત વ જવાબાત

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! અબ દા'વતે ઇસ્લામી કે ઇશાઅતી ઇદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 112 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “ચન્દે કે બારે મેં સુવાલ જવાબ” સફહા 84 તા 88 સે “છ સુવાલાત વ જવાબાત” મુલા-હઝા હોં. યેહ હર ઇદારે બલકે હર મુસલ્માન કે લિયે મુફીદ હી નહીં મુફીદ તરીન હેં.

ચન્દે કી રકમ સે ઇજતિમાઈ કુરબાની કે લિયે ગાએ ખરીદના

સુવાલ : મઝહબી યા ફલાહી ઇદારે કે ચન્દે કી રકમ સે ઇજતિમાઈ કુરબાની કે લિયે બેચને કે વાસિતે ગાએ ખરીદી જા સક્તી હેં યા નહીં ?

જવાબ : ચન્દે કી રકમ કારોબાર મેં લગાના જાઈઝ નહીં. ઇસ કે લિયે ચન્દા દેને વાલે સે સરા-હતન યા'ની સાફ લફઝોં મેં ઇજાઝત લેની ઝરૂરી હે. (જો ઇસ કી ઇજાઝત દે તો સિફ ઉસી કે ચન્દે કી રકમ જાઈઝ કારોબાર મેં લગાઈ જા સક્તી હે યૂંહી બિલા ઇજાઝતે માલિક ઉસ કે દિયે હુએ ચન્દે કી રકમ કર્ઝ દેને કી ભી ઇજાઝત નહીં)

ગુ-રબા કો ખાલે લેને દીજિયે

સુવાલ : અગર કોઈ શખ્સ હર સાલ ગરીબોં કો ખાલ દેતા હો, ઉસ પર ઇન્ફિરાદી કોશિશ કર કે અપને મદ્રસે યા દીગર દીની

करमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظٌ وَأَلِيمٌ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइइ शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से कजूस तरीन शप्स है. (नुबुह)

कामों के लिये ज्वाल लेना और गरीबों को महइम कर देने कैसा है ?

ज्वाल : अगर वाकेई कोई जैसा गरीब मुस्तहिक आदमी है जिस का गुजारा उसी ज्वाल या जकात व कित्रा पर मौकूई है तो अब उस को मिलने वाले इन अतिथ्यात की अपने ईदारे के लिये तरकीब कर के उस गरीब को महइम करने की हरगिज ईजाजत नहीं. (और अगर उन गरीबों का गुजारा ज्वाल वगैरा पर मौकूई न हो तो ज्वाल का मालिक जिस मसरफ़ में याहे दे सकता है म-सलन दीनी मद्रसे को दे दे) मेरे आका आ'ला उजरत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रज्जि ज्वालन عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : अगर कुछ लोग अपने यहाँ की ज्वालें लाजत मन्द यतीमों, बेवाओं, मिसकीनों को देने याहें के इन की सूरते लाजत रवाई येही हो, उसे कोई वाईज (या'नी वा'ज कलने वाला) या मद्रसे वाला रोक कर मद्रसे के लिये ले ले तो येह उस का जुल्म होगा. وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ

(मुलज्जस अज इतावा र-जविथ्या, जि. 20, स. 501)

ज्वालों के लिये जे ज़िद मत डीजिये

सुवाल : अगर कोई शप्स अहले सुन्नत के किसी मद्रसे या किसी गरीब मुसल्मान को ज्वाल देने का वा'दा कर युका हो उस को ज ईस्वार अपने ईदारे म-सलन दा'वते ईस्लामी के लिये ज्वाल देने पर आमादा करना कैसा ?

इरमाने मुस्तक़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा ठिक हो और वोड मुज पर दुरदे पाक न पडे. (f)

जवाब : औसा न करे के यूं आपस में अदावत व मुना-इरत का सिद्धिसला होगी, इतिनों, गीबतों, युग्लियों, बढ गुमानियों, ँलाम तराशियों और ढिल आजारियों वगैरा गुनाहों के दरवाजे खुलेंगे. मेरे आका आ'ला डउरत, ँमामे अडले सुन्नत, मौलाना शाड ँमाम अडमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इतावा र-जविथ्या जिल्द 21 सङ्खडा 253 पर इरमाते हैं : मुसल्मानों में बिला वजहे शर-ँ ँप्तिलाङ व इतिना पैदा करना नयाबते शैतान है. (या'नी औसे लोग ँस मुआ-मले में शैतान के नाँव हैं) डदीसे पाक में है : "इतिना सो रडा है उस के जगाने वाले पर अडलाड عَزَّ وَجَلَّ की ला'नत."

(الجامع الصغير للسيوطي ص 370 حديث 970)

सुन्नी मदारिस की जालें मत काटिये

सुवाल : अगर कोई कहे के मैं डर साल हुलां सुन्नी ँदारे को जाल देता हूं. उस को येड समजाना कैसा के ँस साल डमारे दीनी ँदारे म-सलन दा'वते ँस्लामी को जाल दे दीजिये.

जवाब : अगर वोड साडिब किसी औसी जगड जाल देते हैं जो के उस का सडीड मसरङ् है तो उस ँदारे को मडरूम कर के अपनी तन्जीम के लिये जाल डसिल कर लेना उस ँदारे वालों के लिये सदमे का बाँस डोगा, यूं आपस में कशीदगी पैदा डोगी लिडाजा डर उस काम से ँजतिनाब कीजिये जिस

इरमाने मुस्तकः صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरडे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआक होंगे. (क्रमल)

से मुसल्मानों में बाहम रन्जिशें हों मुसल्मानों को नइरत व वइशत से बयाना बहुत जरूरी है. जैसा के हुजुरे अकरम, नूरे मुजस्साम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह्तशम بِشَرُّوْا وَا لَا تَنْفَرُوْا- : का ईशदि मुअज़्जम है : या'नी भुश भबरी सुनाओ और (लोगों को) नइरत न दिलाओ.

(صحيح بخاری ج ۱ ص ۴۲ حدیث ۶۹)

सुन्नी मद्रसे को पाल पुट टे आधिये

सुवाल : अगर कहीं दा'वते ईस्लामी के लिये पाल लेने पड़ोये, उस ने अक हमें दी और अक पाल बया कर रभते हुअे कहा के येह अहले सुन्नत के कुलां दारुल उलूम को देनी है. आप आधे घन्टे के बा'द मा'लूम कर लीजिये अगर वोह लेने न आअें तो येह पाल भी आप ही ले लीजिये. अैसी सूरत में क्या करना याहिये ?

जवाब : येह जेहन में रहें के कुरबानी की पालें ईकट्टी करना दा'वते ईस्लामी का "मक्सद" नहीं "जरत" है. दा'वते ईस्लामी का अक मक्सद नेकी की दा'वत आम करने की गरज से नइरतें मिटाना और मुस्ल्मानों के दिलों में मडुब्बतों के यराग जलाना भी है. तमाम सुन्नी ईदारे अक तरह से दा'वते ईस्लामी ही के ईदारे हें और दा'वते ईस्लामी तमाम सुन्नी ईदारों की अपनी अपनी और अपनी सुन्नतों लरी तहरीक है. मुम्किना सूरत में अखी अखी नियतें कर के

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर कसरत से दुइडे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुइडे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है. (मुश्फ़िह)

कस्साब के लिये 20 म-दनी इ्ल

- 1 पडले किसी माहिर गोशत इरोश की निगरानी में ज्बल वगैरा का काम सीख ले के उस ना तजरिबा कार के लिये येह काम ज़रिज नही जिस की वजह से किसी के जानवर के गोशत और ખाल वगैरा को उई व आदत (या'नी आम मा'भूल और दस्तूर) से हट कर नुकसान पड़ोयता हो.
- 2 माहिर गोशत इरोश को भी याहिये के जल्द बाज़ी या ला परवाही के सबब ખाल में उई व आदत से ज़रिज गोशत न लगा रहने दे, इसी तरह छीछडे उतारने में भी अहतियात से काम ले के इस में ज्वाह म ज्वाह बोटी और यरबी न यली ज़ाये. नीज़ पाई जाने वाली हड्डियां वगैरा भी इंकने के बज्जये टुकडे बना कर गोशत ही में डाल दे और माहिर गोशत इरोश को भी उई व आदत से हट कर गोशत या ખाल को नुकसान पड़ोयाना ज़रिज नही.
- 3 ब-करह ईद में उभूमन बडे जानवर का त्मेजा और ज्बान वगैरा निकाल कर सिरी का बकिय्या डिस्सा और पाये के पुर इंक दिये जाते हैं, इसी तरह बकरे के सिरी पाये के भी पाये जाने वाले बा'ज अज्जा ज्वाह म ज्वाह ज़ायेअ कर दिये जाते हैं अइसा न किया ज़ाये अगर खुद जाना नही याहते तो किसी गरीब मुसल्मान को बुला कर अहतिराम के साथ दीजिये के इस तरह के काई अइराद इन दिनो गोशत और

करमाने मुस्तका صلى الله تعالى عليه واله وسلم : जो मुज पर अेक दुइए शरीक पढता है अल्लाह ऊस के लिये अेक कीरात अजूर लिखता है और कीरात उहुए पढाड जितना है. (Jizyah)

यरबी वगैरा की तलाश में फिर रहे होते हैं. नीज येह भी याद रभिये के बडे जानवर के सिरी पाअे मुकम्मल यमडे समेत अस्ल ખाल से जुदा कर लेने की वजह से ખाल की कीमत में कमी आती है.

❖4❖ आम दिनों में पूंछ का गोशत दूसरे गोशत के साथ वजून में बेया जाता है जबके कुरबानी के जानवर की पूंछ उभूमन ખाल में ही जाने देते हैं इस से इस का गोशत जाअेअ हो जाता है, बलके बडे जानवर में से बा'ज अवकात खाल समेत पूंछ काट कर कैंक देते हैं, येह तरीका भी गलत है, इस तरह करने से खाल की कीमत में भी कमी आती है.

❖5❖ जिन मुल्कों में खाल काम में ले ली जाती है (म-सलन पाक व छिन्द में) वहां उई से हट कर ख्वाह म ख्वाह अैसी जगह "कट" लगा देना जाईज नहीं जिस से खाल की कीमत में कमी आ जाअे. गोशत इरोशों को याहिये के जिस तरह अपने जाती जानवर की खाल संभाल संभाल कर उधेउते हैं, दूसरों के मुआ-मले में भी इसी तरह करें.

❖6❖ दुम्बे की यक्की की खाल उधेउने में इस बात का खयाल रभिये के यरबी खाल में बाकी न रहे.

❖7❖ छीछे और यरबी अेक तरह जम्भ कर के आभिर में छीछों की आड में यरबी भी उठा ले जाना धोका और योरी है. पूछ कर

﴿8﴾ इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज़ पर दुइडे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (७)

भी न लें के “सुवाल” है और बिला हाजते शर-ई सुवाल जाईल नही. इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : जो शप्स हाजत के बिगैर लोगों से सुवाल करता है वोह मुंह में अंगारे डालने वाले की तरह है. (شُعْبَةُ الْإِيمَانِ ج ٣ ص ٢٧١ حديث ٣٠١٧)

﴿8﴾ बसा अवकात कुरबानी के जानवर में से ओटी का बेहतरीन गोल लोथडा चुपके से टोकरी में सरका लिया जाता है येह साफ़ साफ़ थोरी है. बिला ईजाजते शर-ई मांग कर लेना भी दुरुस्त नही. इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ है : “जो माल में ईजाफ़े के लिये लोगों से सुवाल करता है वोह अंगारे मांगता है, अब उस की मरजी है के अंगारे कम जम्अ करे या ज़ियादा.” (مسلم ص ١٨٠ حديث ١٠٤١)

हां अगर लोगों में गोशत बांटा जा रहा है और गोशत इरोश ने भी लेने के लिये हाथ बढ़ा दिया तो हरज नही.

﴿9﴾ गोशत का हर वोह हिस्सा जो आम दिनों में ईस्ति'माल में लिया जाता है, कुरबानी के दिनों में भी काम में लिया जाये. ईइडे और थरबी वगैरा के टुकडे कर के गोशत के साथ तकसीम कर देना मुनासिब है, ईस तरह की चीजों को ईंका न जाये अगर फुद जाना या गोशत के साथ तकसीम करना नही चाहते तो यूं भी हो सकता है के जो जइरत मन्द लेना चाहे उसे बुला कर दे दिया जाये या किसी के हवाले कर दिया जाये के किसी जइरत मन्द को दे दे बडके अहत्तियात ईसी में है के फुद ही किसी मुसल्मान के हवाले कर दीजिये. येह मस्अला याद रहे

﴿فرمانہ مستحکم﴾ طَلَى اللّٰهُ تَعَالَى غَلِيْبًا وَّالْوَسْمٰنُ : जिस ने मुज पर अक बार दुरडे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रडमतें बेजता है. (س)

के गैर मुस्लिम तंगियों वगैरा को ખाल तो क्या अक भोटी भी कुरबानी के गोशत में से देना जाईज नहीं.

﴿10﴾ अगर जानवर के गले में रस्सी, नथ, यमडे का पट्टा, धुंगुर, डार वगैरा है तो इन सब को छुरी से जूंतू काट कर नहीं बल्के काईदे के मुताबिक फोल कर निकाल लेना चाहिये ता के नापाक न हों. बिगैर निकाले जभ्ब करने की सूरत में येह चीजें पून आलूद हो जाती हैं और मस्मला येह है के बिला हाजत किसी पाक चीज को कस्टन (या'नी जान बूज कर) नापाक करना हराम है. बिलइर्ज नापाक हो भी जाअें तब भी इन को कैंक न दिया जाअे, पाक कर के फुद ईस्ति'माल में लाअें या किसी मुसल्मान को दे दें. याद रभिये ! तज्जीअे माल (या'नी माल जअेअ करना) हराम है.

﴿11﴾ छुरी डेरने से कबल जानवर के गले की ખाल नर्म करने के लिये अगर पाक पानी के भरतन में नापाक पून वाला हाथ डाल कर युल्लू भरता तो युल्लू का और उस भरतन का तमाम पानी नापाक हो गया. अब येह पानी गले पर मत डालिये. ईस का आसान सा हल येह है के जिन का जानवर है उसी से कडिये वोह पाक साई पानी का गिलास भर कर अपने हाथ से जानवर के गले पर डालिये मगर येह अेहतियात की जाअे के गिलास से पानी डालने या छिउकने के दौरान भीय में न कोई अपना पून आलूद हाथ डालिये न ही पानी वाले गले पर पून वाला हाथ मले येह बात सिई कुरबानी के लिये ખास नहीं, जब भी जभ्ब करें ईस का ખयाल रभिये.

करमाने मुस्तक। ضلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : जो शम्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (प्रान)

❖12❖ अब्ज के भा'द पून आलूद छुरी और उसी पून से लिथडे हुमे डाय घोने के लिये पानी की बाव्टी में डाल देने से छुरी और डाय पाक नहीं छोते उलटा बाव्टी का सारा पानी भी नापाक हो जाता है. अक्सर इसी तरह के नापाक पानी से ખाल उधेउने में भी मदद ली जाती है और येही पानी गोशत के अन्दरूनी छिस्से में जम्भ शुदा पून घोने के लिये भी बहाया जाता है गोशत के अन्दर का पून पाक होता है मगर नापाक पानी बहाने के सबब येह नुक्सान होता है के येह नापाक पानी जहां जहां से गुजरता है गोशत के पाक छिस्से को भी नापाक करता यला जाता है. औसा मत कीजिये.

❖13❖ अज्जर गोशत फ़रोश के लिये येह ज़रूरी है के ब-करल छेद के उई व आदत (या'नी दस्तूर) के मुताबिक कुरबानी के गोशत की ओटियां बना कर दे. भा'ज कस्साब जल्द बाजी के सबब गोशत के बडे बडे टुकडे बनाते, नलियां भी सहीह से तोड कर नहीं देते और सिरी पाअे भी साबित छोड कर यल देते हैं, औसा न किया करें. इस तरह कुरबानी करवाने वाले सप्त आजमाईश में आ जाते हैं और बसा अवकात सिरी पाअे वगैरा केंकने पड जाते हैं. भा'ज लोग सभ्र करने के बजाअे कस्साब को बुरे बुरे अल्काब और गालियों से नवाजते और पूब गुनाहों त्मरी भाते करते हैं. हां, ईजारा करते वक्त कस्साब ने कड दिया हो के सिरी पाअे बना कर नहीं दूंगा तो अब साबित छोडने में कोई हरज नहीं.

करमाने मुस्तका : طي الله تعالى عليا وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद पैक न पढा तहकीक वोह
बदअप्त हो गया. (उरुग)

❖14❖ बा'ज कस्साब हिर्स के सबब बहुत जियादा जानवर “बुक” कर लेते हैं और अक जगह छुरी फेर कर दूसरी जगह यले जाते हैं, फिर उधर गला काट कर पहली जगह वापस आ कर भाल उधेउने लगते हैं और अब दूसरी जगह वाले “धन्तिजार” की आग में सुलगते हैं। इस तरह लोग बहुत तकलीफ में आते, बातें बनाते, कस्साब को भुरा भला कहते हैं और फिर कई गुनाहों के दरवाजे खुलते हैं। कस्साबों को याहिये के काम उतना ही लें जितना सलीके के साथ कर सकें और किसी को शिकायत का मौकअ न मिले।

❖15❖ कस्साब को याहिये के गोश्त बनाते वक्त हराम अजजा जुदा कर के फेंक दे। जिसे गोश्त खाना हो उस पर जभीहा की हराम चीजों की शनाप्त ईर्ज और मकड़हे तहरीभी अजजा की पहचान वाजिब है ताके गुनाहों भरी चीजें न खा डाले। (गोश्त के न भाअे जाने वाले अजजा का भयान आगे आ रहा है)

❖16❖ गोश्त इरोश को याहिये के कुरबानी के दिनों में पैसे कमाने की हिर्स के सबब शरीअत की खिलाफ वर्जा करते हुअे 100 जानवर गलत सलत काट कर अपनी आपिरत दाव पर लगाने के बजाअे शरीअत के मुताबिक बेशक सिर्फ अक ही जानवर काटे, اِنَّ كَيْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ दोनों जहानों में इस की पूब भ-र-कतें पाअेगा के पैसों के लालय में जल्ल बाजी की वजह से इस काम में बसा अवकात बहुत सारे गुनाह करने पड जाते हैं।

इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर दस भरतबा जुब्द और दस भरतबा शाम दुड़दे पाक पढा उसे क्रियात के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अबुलक)

﴿17﴾ बा'ज गोशत इरोश बेयने के बडे (और छोटे) जानवर की ખાલ उतार लेने के बा'द गोशत के अन्दर मौजूद हिल में कट लगा कर उस में या भून की बडी नस में पाँचप के जरीअे पानी यढाते हैं इस तरह करने से गोशत का वज़न बढ जाता है. इस तरह का गोशत धोके से बेयना भी हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है. बा'ज मुर्गी का गोशत बेयने वाले जब्द के बा'द मुर्गी के पर उतार कर पेट की सफ़ाई कर के सिर्फ़ हिल उस में लगा रहने देते और उस मुर्गी को तकरीबन 15 मिनट के लिये पानी में डाल देते हैं, इस तरह इस के गोशत का वज़न तकरीबन 150 ग्राम बढ जाता है. जब्द शुदा कमज़ोर बकरे के ठन्डा होने के बा'द उस की बोंग के जरीअे गोशत में मुंड से हवा त्तर कर गोशत को कुला देते हैं, गाहक गोशत ले कर घर पड़ोयता है तो हवा निकल चुकी होती है और गोशत की तह वाली हड्डियां रह जाती हैं. येह भी सरासर धोका है, बिल ખુसूस कुरबानी के दिनों में वज़न से बेये जाने वाले जिन्दा बकरो वगैरा को बेसन (या'नी यने का आटा) पिला कर उपर भूब पानी वगैरा पिला कर उन का वज़न बढा दिया जाता है, जैसे जानवर भी यूं धोके से बेयना गुनाह है. याद रभिये ! हराम कमाई में कोई त्तराई नही. इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने हराम का अेक लुकमा ખाया उस की ચાલીस दिन की नमाज़ें कबूल नही की जाओंगी और उस की दुआ ચાલીस दिन तक ना मकबूल होगी. (अफ़रुसुस بماثور الخطاب ج ۳ ص ۵۹۱ حدیث ۵۸۵۳) मज़ीद अेक रिवायत में है : “इन्सान के पेट में जब हराम का लुकमा पडता है, जमीन व

इरमाने मुस्तक : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुइद शरीक न पढा उस ने जका की. (मुरादात)

आस्मान का हर इरिश्ता उस पर उस वक्त तक ला'नत करता है जब तक के वोह हराम लुकमा उस के पेट में रहे और अगर इसी हालत में मर गया तो उस का ठिकाना जहन्नम होगा.”

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ۱۰)

﴿18﴾ दुरुस्त काम करने में यकीनन वक्त जियादा सर्ई होगा, इस पर हो सकता है हमपेशा अइराद मजाक भी उडाओं मगर इस पर सभ्र कीजिये, ખબરदार ! कहीं शैतान लडाई त्मिडाई में उलजा कर गुनाहों में न इंसा दे !

﴿19﴾ गोश्त का जो हिस्सा गोबर या जब्द के वक्त निकले हुअे पून वाला हो जाअे, उस को जुदा रभिये और गोश्त के मालिक को बता दीजिये ताके वोह उसे अलग से पाक कर सके. पकाने में अगर अेक भी नापाक बोटी डाल दी तो वोह पूरी देग का कोरमा या बिरयानी नापाक कर देगी और इस का जाना हराम हो जाअेगा. (याद रहे ! जब्द के भा'द गरदन के कटे हुअे हिस्से पर बया हुवा पून और गोश्त के अन्दर म-सलन पेट में या छोटी छोटी रगों में जो पून रह जाता है वोह नीज दिल्, कलेज वगैरा का पून पाक होता है. हां दमे मस्कूह या'नी जब्द के वक्त जो पून भड कर निकल युका वोह अगर कटे हुअे गले वगैरा को लग गया तो नापाक कर देगा.)

﴿20﴾ जानवर काटने और कटवाने वाले को याहिये के आपस में उजरत तै कर लें क्यूंके मस्अला येह है के जहां दला-लतन (UNDER STOOD) या'नी अलामत से मा'लूम हो, या सरा-हतन (या'नी

करमाने मुस्तका على الله تعالى عليه واليوسلم : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीक पढेगा में क्रियामत के दिन उस की शक्राअत करेगा. (क्रमल)

पुल्लम पुल्ला, आछिरन) उजरत साभित हो वहां तै करना वाजिब है. जैसे मौकअ पर तै करने के बजाये इस तरह कइ देना : काम पर आ जाओ देख लेंगे, जो मुनासिब होगा दे देंगे, भुश कर देंगे, पर्या भिलेगी वगैरा अल्फाज क्त्अन नाकाई हैं. बिगैर तै किये उजरत लेना देना गुनाह है, तै शुदा से आँद तलब करना भी मन्नूअ है. हां जहां औसा मुआ-मला हो के काम करवाने वाले ने कहा : कुछ नहीं दूंगा, उस ने कइ दिया : कुछ नहीं लूंगा. और फिर काम करवाने वाले ने अपनी भरजी से दे दिया तो इस लैन दैन में कोई हरज नहीं.

गोशत के 22 अजजा जो नहीं जाये जाते

इँजाने सुन्नत जिह्द अव्वल ओपर से सइहा 405 ता 408 पर है : मेरे आका आ'ला हजरत ईमाम अहमद रजा पान इलाल हैं मगर बा'ज, के हराम या मन्नूअ या मक़ूह हैं

﴿1﴾ रगों का पून ﴿2﴾ पिता ﴿3﴾ कुकना (या'नी मसाना) ﴿4,5﴾ अलामाते मादा व नर ﴿6﴾ बैजे (या'नी कपूरे) ﴿7﴾ गुदूद ﴿8﴾ हराम मज्ज ﴿9﴾ गरदन के दो पट्टे, के शानों तक पिये होते हैं ﴿10﴾ जिगर (या'नी कलेज) का पून ﴿11﴾ तिल्ली का पून ﴿12﴾ गोशत का पून के बा'दे जब्द गोशत में से निकलता है ﴿13﴾ हिल का पून ﴿14﴾ पित या'नी वोह

करमाने मुस्तका : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَلِيظًا وَالْوَالِدَاتُ يُرْتَدْنَ : मुज पर दुर्रदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तखारत है. (अ. 11)

उर्द पानी, के पित्ते में छोटा है ﴿15﴾ नाक की रतूबत, के लेड में अक्सर छोती है ﴿16﴾ पापाने का मकाम ﴿17﴾ ओजडी ﴿18﴾ आंतें ﴿19﴾ नुत्फा¹ ﴿20﴾ वोह नुत्फा, के पून छो गया ﴿21﴾ वोह (नुत्फा) के गोशत का लोथडा छो गया ﴿22﴾ वोह के (नुत्फा) पूरा ज्ञानवर बन गया और मुर्दा निकला या बे जब्ज मर गया. (इतावा र-जविय्या, जि. 20, स. 240, 241)

समजदार कस्साब बा'ज मन्नूआ यीजें निकाल दिया करते हैं मगर बा'ज में एन को भी मा'लूमात नहीं छोतीं या बे अेहतियाती भरतते हैं. लिहाजा आज कल उमूमन ला एल्मी की वजह से जो यीजें सालन में पकाई और भाई जाती हैं उन में से यन्द की निशान देही करने की कोशिश करता हूं.

पून

जब्ज के वक्त जो पून निकलता है उस को “दमे मर्रूह” कहते हैं. येह नापाक छोता है इस का पाना डराम है. बा'दे जब्ज जो पून गोशत में रह जाता है म-सलन गरदन के कटे हुअे हिस्से पर, दिल के अन्दर, कलेज और तिल्ली में और गोशत के अन्दर की छोटी छोटी रगों में येह अगर्ये नापाक नहीं मगर इस पून का भी पाना मन्नूअ है. लिहाजा पकाने से पहले सफ़ाई कर लीजिये. गोशत में कई जगह छोटी छोटी रगों में पून छोता है उन की निगह दाशत काई मुश्किल है, पकने के बा'द वोह रगें काली डोरी की तरह छो जाती हैं. पास कर

1 : मनी

करमाने मुस्तक। ملى الله تعالى عليه واله وسلم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो के तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है. (طبرانی)

भेजे, सिरी पात्रे और मुर्गी की रान और पर के गोशत वगैरा में भारीक काली डोरियां देणी जाती हैं आते वक्त इन को निकाल दिया करें. मुर्गी का हिल भी साभित न पकाईये, लम्बाई में चार चीरे कर के इस का पून पडले अस्थी तरड साइ कर लीजिये.

हराम भग्न

येड सकेद डोरे की तरड होता है जो के भेजे से शुद्ध हो कर गरदन के अन्दर से गुजरता हुवा पूरी रीठ की हड्डी में आभिर तक जाता है. माहिर कस्साब गरदन और रीठ की हड्डी के बीच से दो परकाले या'नी दो टुकडे कर के हराम भग्न निकाल कर इंक देते हैं. मगर बारडा भे अहत्याती की वजह से थोडा बहुत रड जाता है और सालन या बिरयानी वगैरा में पक भी जाता है. युनान्चे गरदन, चांप और कमर का गोशत घोते वक्त हराम भग्न तलाश कर के निकाल दिया करें. येड मुर्गी और दीगर परिन्दों की गरदन और रीठ की हड्डी में भी होता है, पकाने से कबल इस को निकालना बहुत मुश्किल है लिहाजा आते वक्त निकाल देना चाहिये.

पहें

गरदन की भजभूती के लिये इस की दोनों तरफ पीले रंग के दो लम्बे लम्बे पहें कन्धों तक भिये हुअे होते हैं. इन पहें का जाना मन्नूअ है. गाय और बकरी के तो आसानी से नजर आ जाते हैं मगर मुर्गी और परिन्दों की गरदन के पहें ब आसानी नजर नहीं आते, आते वक्त हंड कर या किसी जानने वाले से पूछ कर निकाल दीजिये.

गुद

गरदन पर, हडक में और आ'ज जगड चरबी वगैरा में छोटी बडी कहीं सुर्भ और कहीं मटियाले रंग की गोल गोल गांठें

इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइइ शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शप्स है. (त्रुमे ७)

होती हैं एन को अ-रबी में गुद्दा और उर्दू में गुद्दू कइते हैं. येह भी मत पाईये, पकाने से पइले हूँ कर निकाल दीजिये. अगर पके हुअे गोशत में भी नजर आ जाअे तो निकाल दीजिये.

कपूरे

कपूरे को ખુस्या, झोता या बैजा भी कइते हैं एन का खाना मकड़डे तइरीमी है. येह बैल, अकरे वगैरा (नर या'नी मुजकर) में नुमायां होते हैं. मुर्गे (नर) का पेट खोल कर आंतें हटाअेंगे तो पीठ की अन्दरूनी सतह पर अन्डे की तरह सङ्केट दो छोटे छोटे भीज नुमा नजर आअेंगे येही कपूरे हैं. एन को निकाल दीजिये. अइसोस ! मुसल्मानों की भा'ज होटलों में दिल्, कलेज के एलावा बैल, अकरे के कपूरे भी तवे पर लून कर पेश किये जाते हैं गालिअन होटल की खान में एस डिश को "कटाकट" कहा जाता है. (शायद एस को "कटाकट" एस लिये कइते हैं के गालक के सामने ही दिल् या कपूरे वगैरा डाल कर तेज आवाज से तवे पर काटते और लूनते हैं एस से "कटाकट" की आवाज गूंजती है)

ओअडी

ओअडी के अन्दर गलाजत लरी होती है एस का खाना मकड़डे तइरीमी है मगर मुसल्मानों की अेक ता'दाह है जे आज कल एस को शौक से खाती है.

“या रसूलव्लाह आप पर खान कुरखान” के बाईस डुरइ की निस्खत से कुरखानी की खालें जम्अ करने वाले

के लिये 22 निय्यतें और अेडतियातें

दो इरामीने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ﴿1﴾ “मुसल्मान की निय्यत उस के अमल से अेडतर है.” (मुअज्जिब १८० व १८१ हदित ०१६२)

﴿۝۱﴾ इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवुद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइदे पाक न पढे. (१/५)

﴿2﴾ “अच्छी नियत बन्दे को जन्नत में दाखिल कर देती है.”

(ألفردوس بمأثور الخطّاب ج ٤ ص ٣٠٠ حديث ٦٨٩٠)

दो म-दनी इल : (1) बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अ-मले भैर का सवाब नहीं मिलता (2) जितनी अच्छी नियतें जियादा, उतना सवाब भी जियादा.

﴿1﴾ रिजाअे ँलाही عَزَّ وَجَلَّ के लिये अच्छी अच्छी नियतें करता हूं

﴿2﴾ हर हाल में शरीअत व सुन्नत का दामन थामे रहूंगा ﴿3﴾

कुरबानी की ખालों के लिये भागदौड के जरीअे दा'वते ईस्लामी के साथ तआवुन कइंगा ﴿4﴾ कोई लाभ बढ सुलूकी करे मगर ईजहारे गुस्सा

और ﴿5﴾ बढ अप्लाकी से परहेज कर के दा'वते ईस्लामी की नामूस व ईज्जत की डिङ्गलत कइंगा ﴿6﴾ कुरबानी की ખालों के सबब लाभ

मसइक़ियत हुई बिला उर्रे शर-ई किसी भी नमाज की जमाअत तो क्या तकभीरे उिला भी तर्क नहीं कइंगा ﴿7﴾ पाक लिबास मअ ईमामा

शरीफ़ और तहबन्द शोपर वगैरा में उल कर नमाजों के लिये साथ रहूंगा (इस्बे जइरत बस्ते वगैरा पर भी रभ सकते हैं. ईस की ખास ताकीद है,

क्यूंके ज्बल के वक्त निकला हुवा भून नजासते गलीजा और पेशाब की तरह नापाक है और खालें जम्अ करने वाले का अपने कपडे पाक रभना ईन्तिहाई

दुश्वार है. बहारे शरीअत जिहद 1 सइहा 389 पर है : “नजासते गलीजा का हुकम येह है के अगर कपडे या बदन में अक दिरहम से जियादा लग जाअे तो उस

का पाक करना इर्ज़ है, बे पाक किये नमाज पढ ली तो होगी ही नहीं और कस्दन पढी तो गुनाह भी हुवा और अगर ब नियते ईस्तिफ़ाइ (या'नी ईस हुकमे शरीअत

को डलका जान करे) है तो कुइ हुवा और अगर दिरहम के बराबर है तो पाक करना वाजिब है के बे पाक किये नमाज पढी तो मकइहे तहरीमी हुई

या'नी औसी नमाज का ईआदा वाजिब हुवा और कस्दन पढी तो गुनहगार

इरमाने मुस्तका صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर रोके जुमुआ दो सो बार दुरेदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआक छोणे. (अहमद)

भी हुवा और अगर दिरहम से कम है तो पाक करना सुन्नत है के बे पाक किये नमाज हो गई मगर खिलाई सुन्नत हुई और इस का ईआदा बेहतर है.” ﴿8﴾ मस्जिद, घर, मक्तब और मद्रसे वगैरा की दरियों, यटाईयों, कारपेट और दीगर चीजों भून आलूद होने से बयाउिंगा (वुजूभाने के गीले इर्श या पाअेदान वगैरा पर भी भून आलूद पाउं समेत जाने से बयने और वुजू करते हुअे भूब अेइतियात करने की जरूरत है वरना नजासत की आलू-दगी और नापाक पानी के छींटों से अपने साथ दूसरों को भी नापाक कर डालने का अेइतमाल रहेगा) ﴿9﴾ भून आलूद बढबूदार कपडों समेत मस्जिद में नहीं जाउिंगा (बढबू न भी आती हो तब भी नापाक बदन या कपडा या चीज मस्जिद में ले जाना मन्अ है. जम्म, इडे, कपडे, ईमामे, यादर, बदन या हाथ मुंड वगैरा से बढबू आती हो तो तब भी मस्जिद के अन्दर दाखिल होना हराम है. ईजाने सुन्नत जिह्द अव्वल सइहा नीये से 1217 पर है : मस्जिद को (बढ) भू से बयाना वाजिब है व लिहाजा मस्जिद में मिट्टी का तेल जलाना हराम, मस्जिद में दिया सलाई (या’नी मायिस की तीली) सुलगाना हराम, हत्ताके हदीस में ईशाद हुवा : मस्जिद में कय्या गोशत ले जाना जाईज नहीं. (अबिन माजह ११३ १-१६८६)) हालांके कय्ये गोशत की (बढ) भू बहुत फईक (या’नी हलकी) है) ﴿10﴾ कलम, रसीद बुक, पेड, गिलास, याय के पियाले वगैरा पाक चीजों को नापाक भून नहीं लगने दूंगा (इतावा र-उविय्या मुअर्रजा जिह्द 4 सइहा 585 पर है “पाक चीज को (बिला ईजाजते शर-ई) नापाक करना हराम है”) ﴿11﴾ जो दूसरे ईदारे को ખाल देने का वा’दा कर युका छोगा उस को बढ अइदी का भशवरा नहीं दूंगा (आसान तरीका येह है के अखी अखी निय्यतों के साथ आप सारा ही साल मु-तवज्जेह रडिये और ખुद ही पडल कर के ખाल बुक करवा कर रबिये) ﴿12﴾ अपनी तै शुदा ખाल अगर किसी

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुज पर कसरत से दुइडे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइडे पाक पढेना
तुम्हारे गुनाहों के लिये भगकिरत है. (इम्रान)

ओक अहम शर-ई मरअला

हमेशा कुरबानी की ढालें और नइली अतिय्यात “कुल्ली इप्तियारात” या’नी किसी भी नेक और ज़रूरी काम में अर्च कर लिये जाओ इस नियत से इनायत इरमाया करें क्यूंके अगर मजसूस कर के दिया म-सलन कडा के, “येह दा’वते इस्लामी के मदसे के लिये है” तो अब मस्जिद या किसी और मद (या’नी उन्वान) में इस का इस्ति’माल करना गुनाह हो जायेगा. लेने वाले को भी याहिये के अगर किसी मजसूस काम के लिये भी यन्दा ले तो अइतियातन कइ दिया करे के हमारे यहाँ म-सलन दा’वते इस्लामी में और भी दीनी काम होते हैं, आप हमें “कुल्ली इप्तियारात” दे दीजिये ताके येह रकम दा’वते इस्लामी जहाँ मुनासिब समजे वहाँ नेक और ज़रूरी काम में अर्च करे. याद रहे ! यन्दा देने वाला “हां” करे और वोह यन्दे या ढाल वगैरा का अस्ल मालिक हो तो ही “इज्जत” मानी जायेगी. लिहाजा यन्दा या ढाल पेश करने वाले से पूछ लिया जाओ के येह किस की तरफ से है अगर किसी और का नाम बताओ तो अब इस का “हां” करना मुकीद न होगी अस्ल मालिक से इनायत वगैरा के जरीओ राबिता करे. (जक़ात और इनायत देने वाले से कुल्ली इप्तियारात लेने की इज्जत नहीं क्यूंके येह “शर-ई हीले” के जरीओ इस्ति’माल किये जाते हैं)

इँजाने मदीना, ग्री कोनिया बगीये के पास, मिरजापूर, अहमदआबाद गुजरात, इन्डिया.

www.dawateislami.net

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جُو مُؤَلَّ عَلَى شَرِيكَهٖ وَهُوَ سَلَامٌ اَللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : જો મુઝ પર એક દુરુદ શરીફ પઢતા હૈ અલ્લાહ ઁસ કે લિયે એક કીરાત અજર લિખતા હૈ ઔર કીરાત ઉદુદ પહાડ જિતના હૈ. (જિહાદ)

મ-દની ઈલ્તિજા : કુરબાની કે તફ્સીલી મસાઈલ બહારે શરીઅત જિલ્દ 3 સફહા 337 તા 353 મેં મુલા-હઝા ફરમા લીજિયે.

रकसे बिस्मिल की बहारें तो मिना में टेषीं
दिले ખૂના બ ફશાં કા ભી તડપના દેખો

(હદાઈકે બખ્શિશ શરીફ)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! اسْتَغْفِرِ اللَّهُ
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ

الصَّامِتُ أَرْفَعَ الْعِبَادَةَ

ખામોશી આ'લાહ-રફે કી ઉબાદત હૈ.

(الْجَامِعُ الصَّغِيرُ لِلشَّيْطَانِي حاديث ٥١٠٨)

તાલિબે ગમે મદીના વ
બકીઅ વ મઘિરત વ
બે હિસાબ જન્નતુલ
ફિરદૌસ મેં આકા કા
પડોસ



21 ઝી કા'દતિલ હરામ 1432 સિ હિ.

18 અકતૂબર 2011 સિ.ઈ.

येह रिसाला पढ कर दूसरे को दे दीजिये

શાદી ગમી કી તકરીબાત, ઈજતિમાઆત, આ'રાસ ઔર જુલૂસે મીલાદ વગૈરા મેં મક-ત-બતુલ મદીના કે શાએઅ કદા' રસાઈલ ઔર મ-દની ફૂલોં પર મુશ્તમિલ પેશ્લેટ તક્સીમ કર કે સવાબ કમાઈયે, ગાહકોં કો બ નિચ્ચતે સવાબ તોહફે મેં દેને કે લિયે અપની દુકાનોં પર ભી રસાઈલ રખને કા મા'મૂલ બનાઈયે, અખ્બાર ફરોશોં યા બચ્ચોં કે ઝરીએ અપને મહલ્લે કે ઘર ઘર મેં માહાના કમ અઝ કમ એક અદદ સુન્નતોં ભરા રિસાલા યા મ-દની ફૂલોં કા પેશ્લેટ પહોંચા કર નેકી કી દા'વત કી ધૂમેં મચાઈયે ઔર ખૂબ સવાબ કમાઈયે.

उत्तरान	पुस्तक	उत्तरान	पुस्तक
सुन्नी मद्रसे को ખાલ ખુદ દે આઈયે	27	ગુફુદ	40
અપની કુરબાની કી ખાલ બેચ દી તો ?	28	કપૂરા	40
કસ્સાબ કે લિયે 20 મ-દની ફૂલ	29	ઓઝડી	41
ગોશત કે 22 અજઝા જો નહીં ખાએ જાતે	37	કુરબાની કી ખાલે જમ્મ કરને વાલે કે લિયે 22 નિયતેં ઔર એહતિયાતે	41
પૂન	38	એક અહમ શર-ઈ મસ્અલા	44
હરામ મગ્ન	39	મ-દની ઈલ્તિજા	46
પહે	39	માખઝ વ મરાજેઅ	48

માخذ ومراجع

મટબુએ	કુતબ	મટબુએ	કુતબ
ضیاء القرآن تبلی گیشنز مرکز الادبیاء لاہور	مراجعة المناجیح	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	قران پاک
کوئٹہ	اشعۃ المدعات	دارالکتب العلمیہ بیروت	صحیح بخاری
دارالمعرفۃ بیروت	الترجمان عن الاعتراف الکبائر	دارابن حزم بیروت	صحیح مسلم
دارالکتب العلمیہ بیروت	مکافئہ القلوب	دارالفکر بیروت	سنن ترمذی
دارالکتب العلمیہ بیروت	لطائف المینن والآخلاق	دارالمعرفۃ بیروت	سنن ابن ماجہ
دارالفکر بیروت	درۃ الناصحین	دارالفکر بیروت	مسند امام احمد
دارالکتب العلمیہ بیروت	حیاء الاحیوان	دارالکتب العلمیہ بیروت	سنن الکبریٰ
داراحیاء التراث العربی بیروت	ہدایہ	دارالمعرفۃ بیروت	المستدرک
دارالمعرفۃ بیروت	درمختار و در المختار	داراحیاء التراث العربی بیروت	معجم کبیر
دارالفکر بیروت	عائگیری	دارالکتب العلمیہ بیروت	شعب الایمان
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دارالکتب العلمیہ بیروت	الفردوس بماثور الخطاب
رضا فاؤنڈیشن مرکز الادبیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ	دارالکتب العلمیہ بیروت	البحر مع الصغیر
مکتبۃ رضویہ باب المدینہ کراچی	فتاویٰ امجدیہ	دارالفکر بیروت	مرقاۃ المفاتیح